M.A
I Year
Ist Paper

CC-1
2

भाषा और बोली में अन्तर सोदाहरण स्पष्ट करें।

Ans:- जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षा, संस्कार, पालन-पोषण, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति, वातावरण आदि के भेद से व्यक्ति की भाषा का निर्धारण होता है, और एक व्यक्ति की भाषा दूसरे व्यक्ति की भाषा से भिन्न हो जाती है, इसलिए यदि सूक्ष्मता से विचार करें तो प्रत्येक व्यक्ति की भाषा स्वतंत्र बोली मानी जायेगी, अर्थात, उसकी अपनी विशेषताएँ होंगी जो दूसरों से भिन्न होगी, किन्तु एक व्यक्ति की भी भाषा विभिन्न रूप धारण कर लेती है, जैसे परिवार में बोलते समय हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं उसी का अपरिचित लोगों से मिलते समय नहीं। जिस रूप में नौकर या दूकानदार से बातें करते हैं उसी रूप में मंत्री या राष्ट्रपति से नहीं। इस तरह स्पष्ट है कि एक व्यक्ति की भाषा परिस्थिति भेद से भिन्न होती है, फिर वाचिक भाषा और लिखित भाषा में भी भेद हो जाता है। कोई भी बोलते समय जैसी भाषा का प्रयोग करता है लिखते समय वैसी ही भाषा का प्रयोग नहीं करता। कवि जयशंकर प्रसाद ने जो भाषा लिखी है वही बोलते नहीं थे।

व्यक्ति की भावना भंगी बोली को प्रोत्साहित करती है तो समाजिकता की भावना भाषा को। भाषा और बोली के इस सिद्धान्तिक भेद को स्वीकार कर लेने पर उनके बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना बहुत कठिन है इससे स्पष्ट है कि भाषा और बोली व्यवहारिक से अधिक सैद्धान्तिक नाम है जब बोली ही किन्हीं कारणों से प्रमुखता प्राप्त कर लेती है तो भाषा कहलाने लगती है इसलिए भाषा और बोली का अन्तर प्रकार का नहीं केवल मात्रा का है।

भाषा और बोली में प्रमुख अन्तर है —

(1) भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है और बोली का सीमित, अर्थात भाषा का व्यवहार अधिक दूर तक होता है और बोली का अपेक्षाकृत कम दूर तक। अतः एक भाषा के क्षेत्र में अनेक बोलियाँ होती हैं किन्तु एक बोली के क्षेत्र में अनेक भाषाएं नहीं हो सकती।

(2) एक भाषा की विभिन्न बोलियां बोलनेवाले परस्पर एक दूसरें को समझ लेते हैं, किन्तु विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले एक दूसरे को नहीं समझ सकते, दूसरें शब्दों में हम ऐसा कह सकते हैं कि किसी भाषा की विभिन्न बोलियों में परस्पर बोधगमता रहती है किन्तु विभिन्न भाषा में नहीं। जैसे खड़ी बोली में 'जाता हूँ' बोलनेवाला ब्रजभाषा में 'जात हौं' अनायास समझ लेगा, किन्तु अंग्रेजी का 'आई गो' नहीं समझ सकता इसलिए खड़ी बोली और ब्रजभाषा हिन्दी की बोलियाँ हुई पर हिन्दी और अंग्रेजी दो भाषाएँ।

Scanned with CamScanner

में जो भाषा लिखी है वही बोलते नहीं थे।

भक्ति की भाषण भंगी बोली को प्रोत्साहित करती है तो सामाजिकता की भावना भाषा को। भाषा और बोली के इस सिद्धान्तिक भेद को स्वीकार कर लेने पर उनके बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना बहुत कठिन है। इससे स्पष्ट है कि भाषा और बोली व्यवहारिक से अधिक सैद्धान्तिक नाम है जब बोली ही किन्हीं कारणों से प्रमुखता प्राप्त कर लेती है तो भाषा कहलाने लगती है इसलिए भाषा और बोली का अन्तर प्रकार का नहीं केवल मात्रा का है।

भाषा और बोली में प्रमुख अन्तर है —

① भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है और बोली का सीमित, अर्थात भाषा का व्यवहार अधिक दूर तक होता है और बोली का अपेक्षाकृत कम दूर तक। अतः एक भाषा के क्षेत्र में अनेक बोलियाँ होती हैं किन्तु एक बोली के क्षेत्र में अनेक भाषाएँ नहीं हो सकती।

② एक भाषा की विभिन्न बोलियाँ बोलनेवाले परस्पर एक दूसरे को समझ लेते हैं, किन्तु विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले एक दूसरे को नहीं समझ सकते, दूसरे शब्दों में हम ऐसा कह सकते हैं कि किसी भाषा की विभिन्न बोलियों में परस्पर बोधगम्यता रहती है किन्तु विभिन्न भाषा में नहीं। जैसे खड़ी बोली में 'जाता हूँ' बोलने वाला ब्रजभाषा में 'जात हौं' अन्यास समझ लेगा, किन्तु अंग्रेजी का 'आई गो' नहीं समझ सकता इसलिए खड़ी बोली और ब्रजभाषा हिन्दी की बोलियाँ हुई पर हिन्दी और अंग्रेजी दो भाषाएँ।

Scanned with CamScanner